इंसानियत

✍ उदित तालुकदार
सहायक प्राध्यापक
आर्य विद्यापीठ महाविद्यालय

आज कहीं दुबक कर बैठी है इंसानियत

क्षत-विक्षत है उसका ज़र्रा-ज़र्रा

इज़ाजत तो न थी उन दलालों को

पर यहाँ तो

इबादत हो रही थी हैवानियत की

ग़लत मुख़्तसर हो रहा है

हर आयात

हर दोहा

वक्त को भी इल्म न था

अपाहिज हो जायेगी इंसानियत

और तख़्त पर बैठेगी हैवानियत !